वर्ष-9 अंक-10, अक्टूबर 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

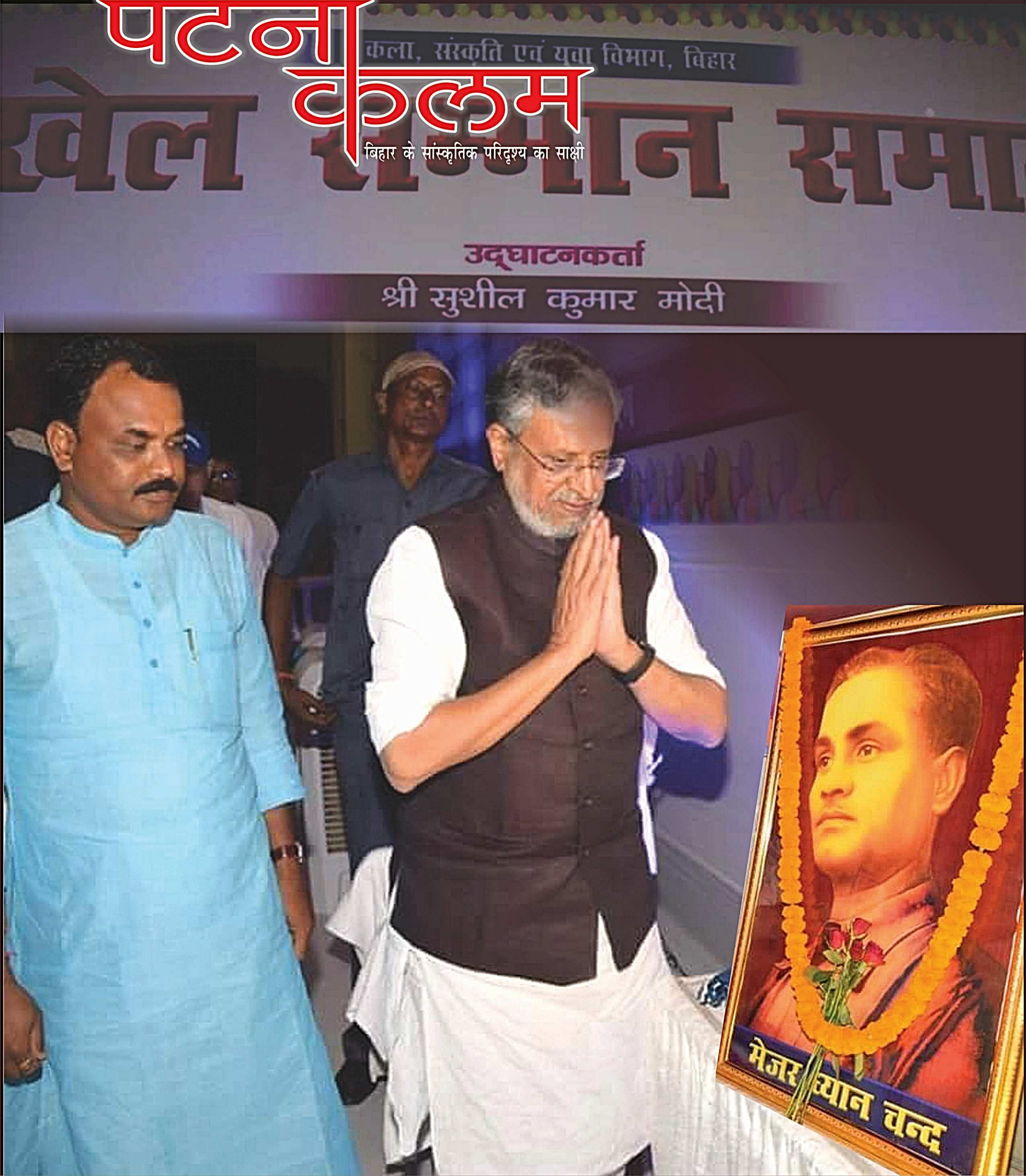

श्रेयसी को अर्जुन पुरस्कार

बिहार में खेल का इतिहास नए पन्ने जोडने को तत्पर दिख रहा है। एक ओर जहां अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों में बिहार के खिलाड़ियों के भाग लेने की अड़चनें दूर हुई वहीं दूसरी ओर राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद के हाथों अर्जुन पुरस्कार प्राप्त कर श्रेयसी सिंह यह सम्मान प्राप्त करने वाली बिहार की पहली महिला खिलाडी बनीं। श्रेयसी की इस उपलब्धि पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए श्रेयसी को बधाई दी है। कला संस्कृति और युवा मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा– श्रेयसी के अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने से बिहार का संपूर्ण खेल जगत गौरवान्वित है। उन्होंने कहा– हमें खुशी है कि इस पुरस्कार की घोषणा के पूर्व बिहार खेल सम्मान के अंतर्गत भी हमने उन्हें सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया है। पुरस्कार स्वरूप उन्हें दो लाख इक्यावन हजार रुपए की राशि प्रदान की गई है।

लेकिन श्रेयसी के लिए ये उपलब्धियां बस शुरुआत हैं। टोक्यो में दो साल बाद होने वाले ओलिंपिक खेलों तक फिटनेस और खेल दोनों में परफेक्ट बनने के लिए प्रतिबद्ध डबल ट्रैप की निशानेबाज श्रेयसी सिंह ने अपने लिए लक्ष्य भी तय कर दिए हैं। गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली 27 वर्षीय श्रेयसी अपना नाम देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार खेल रत्न पाने वाले खिलाड़ियों की सूची में देखना चाहती हैं। वह जानती हैं कि ओलिंपिक पदक जीतने पर यह उपलब्धि हासिल करना उनके लिए आसान हो जाएगी। श्रेयसी ने कहा कि कोई भी पुरस्कार आपको बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है। इससे मुझे खेल रत्न पाने के लिए प्रोत्साहन मिला है। अपने कोच मनशेर सर (मनशेर सिंह, पूर्व निशानेबाज) के मार्गदर्शन में मैं लगातार बेहतर करने की कोशिश कर रही हूं। ओलिंपिक में पदक हासिल करने के लिए मुझे हर तरह से परफेक्ट बनना होगा।

श्रेयसी ने दिल्ली के हंसराज कालेज से पढ़ाई की है। जब वह दसवीं कक्षा में पढ़ाई कर रही थीं तो एथेंस ओलिंपिक में रजत पदक जीतने वाले राज्यवर्धन सिंह राठौर नें उन्हें शूटिंग को अपना कैरियर अपनाने के लिए प्रेरित किया था। श्रेयसी स्वर्गीय दिग्विजय सिंह की बेटी है। दिग्विजय सिंह बिहार के बांका से सांसद हुआ करते थे और अटल बिहारी वाजपेयी की एनडीए सरकार में विदेश राज्य मंत्री भी थे। श्रेयसी को शूटिंग विरासत में मिली है। उनके पिता और दादा कुमार सुरेंद्र सिंह दोनों को शूटिंग का बहुत शौक था। वे दोनों शूटिंग फेडेरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रह चुके हैं। उनके पिता दिग्विजय सिंह का बहुत कम उम्र में 2010 में 'ब्रेन हेमरेज' से निधन हो गया था। उनकी माँ पुतुल कुमारी भी बिहार से सांसद रह चुकी हैं। उन्होंने परिवार से कड़े अनुशासन की सीख ली है और जिसके दम पर उन्हें ओलिंपिक पदक हासिल करने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से सर्वश्रेष्ठ स्थिति में रहने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि ओलिंपिक में पोडियम तक पहुंचना है तो कड़ी मेहनत करनी होगी। इसके लिए कड़े अनुशासन की जरूरत पड़ती है। मुझे परिवार से अनुशासित जिंदगी जीने की सीख मिली है। मैं 'परफेक्ट' बनने के लिए निरंतर मेहनत कर रही हूं। निशानेबाजी में आपकी एकाग्रता बेहद अहम भूमिका निभाती है।

2014 के ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में भी श्रेयसी रजत पदक जीत चुकी हैं। इंचियान एशियाई खेलों में भी उन्हें डबल ट्रैप टीम स्पर्धा में कांस्य पदक मिला था। पहली बार उन्होंने दिल्ली के राष्ट्रमंडल खेलों में शूटिंग की ट्रैप और डबल ट्रैप स्पर्धाओं में हिस्सा लिया था, जहाँ उन्हें छठा और पांचवां स्थान मिला था। श्रेयसी न सिर्फ शूटर हैं बल्कि एक किताब 'वेल्थ वालाज' की लेखिका भी हैं। वे एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'द डिप्लोमैट' की भारत संवाददाता भी हैं। उन्हें शूटिंग के अलावा टेनिस का भी बहुत शौक है।

श्रेयसी ने युवा निशानेबाजों को बढ़ावा देने की भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) की नीति की भी तारीफ की जिससे कि आगे के ओलिंपिक खेलों के लिए मजबूत 'पूल' तैयार हो रहा है। उन्होंने कहा कि महासंघ ने सुमा शिरूर, जसपाल राणा, मनशेर सिंह जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को कोचिंग से जोड़ा। अपने सुपर सीनियर्स से हमें सीखने का मौका मिल रहा है। वे प्रतिस्पर्धा की जरूरतों को समझते हैं। महासंघ जिस तरह से जूनियर निशानेबाजों को तैयार कर रहा है उससे हमारे पास युवा खिलाड़ियों का अच्छा पूल तैयार हो गया है जिनसे हम 2028 ओलंपिक तक पदक की उम्मीद कर सकते हैं।

नेहा कुमारी

वर्ष - 9, अंक-10, अक्टूबर 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
रवि परमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

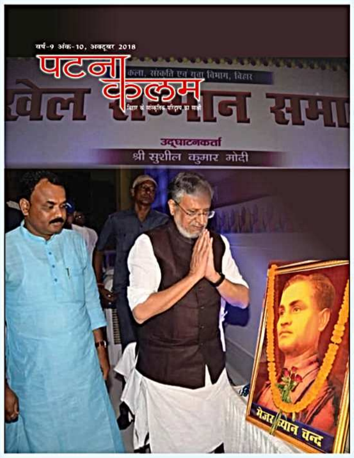

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

खेलना हमारी सहज प्रवृत्ति है। यह सार्वभौमिक है। दुनिया का हर व्यक्ति खेलने की इच्छा रखता हुआ बड़ा होता है। इस विषय में अनेक रोचक सिद्धान्त हैं। इनमें से एक सिद्धान्त 'सहज नैसर्गिक प्रवृत्ति' का सिद्धान्त है। खेल बच्चे की नैसर्गिक प्रवृत्ति में शामिल है, एक स्वाभाविक शारीरिक क्रिया है। एक अन्य सिद्धान्त के मुताबिक बच्चे में अत्यधिक अतिरिक्त ऊर्जा होती है और इसे उपयोग में लाने का एकमात्र माध्यम खेलकूद है। फिर, 'अभिव्यक्ति' का सिद्धान्त है। बच्चे अपनी भावनाएँ प्रकट करना चाहते हैं। यह भी खेलकूद के माध्यम से होता है। खेल के दौरान बच्चे खुशी, उत्साह, गुस्सा, निराशा आदि विभिन्न भावनाएँ प्रकट करते हैं। खेल के माध्यम से वे अनेक नई बातें सीखते हैं। मैदान की कोई भी गतिविधि बच्चे में विभिन्न शारीरिक गुणों के विकास में सहायक होती है – जैसे बेहतर शारीरिक मुद्रा, अंग संचालन, हाथ और आँख में समन्वय आदि। खेल में चाहे वह कुछ विशेष नियमों से बंधा हुआ हीं क्यों न हो, वह स्वयं क्रियाओं की शुरुआत कर सकता है। खेल और क्रीड़ा बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। बच्चा टीमवर्क की अच्छाइयों के बारे में सीखता है, खेल भावना को जज्ब करता है, उम्र बढ़ने के साथ-साथ कुछ नया सीखता है, मुश्किल परिस्थितियों का सामना हिम्मत से करना सीखता है; हाथ में लिए काम को एकाग्रता से करना सीखता है; बाँटने, देने और मदद करने के फल का आनन्द उठाना सीखता है। विशेषतौर पर जब हम कुछ करते हुए सीखते हैं तो जीवन में उसका प्रभाव स्थायी होता है।

खेल हमारी कई तरह की व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमताओं को प्रभावित कर सकता है, जैसे आत्मविश्वास, अनुशासन, दैहिक सजगता, नियम-पालन, निष्पक्षता, भावनाओं का नियन्त्रण, परस्पर-आदर भाव से रहना, हार-जीत से दो-चार होना, टीमवर्क और संवाद तथा सम्प्रेषण की दक्षताएँ। कह सकते हैं, इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों ने जो समाजीकरण का नया पाठ सीखा, नए सामाजिक मूल्य सीखे, निश्चय ही एक बेहतर नागरिक बनने में वे अनुभव जिंदगी भर उनके साथ रहेंगे।

वास्तव में खेलों में सरहदें लाँघ जाने की ताकत होती है। बिहार खेल सम्मान खेल की इसी ताकत को स्वीकार करने की कोशिश है। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस को देश भर में खेल दिवस के रूप मनाया जाता है। बिहार खेल सम्मान के लिए भी यह दिवस खास तौर पर रेखांकित किया गया है ताकि खेल की उस गौरवशाली परंपरा से हमारे युवा खिलाड़ी प्रेरणा ग्रहण कर सकें। इस वर्ष भी खेल दिवस के अवसर पर बिहार खेल रत्न सहित 15 खेलों के लिए 294 खिलाड़ी सम्मानित किये गए। निश्चित रूप से यह सम्मान भविष्य में उन्हें बेहतर उपलब्धियों के लिए प्रेरित करता रहेगा और वे एक श्रेष्ठ खिलाड़ी ही नहीं, एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में भी वे राज्य एवं राष्ट्र की पहचान बन सकेंगे।

शुभकामनाओं के साथ

रवि परमार

(रवि परमार)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

खेल सम्मान समारोह

खिलाडियों को राज्य की सरकारी सेवाओं में मिलेगा मौका

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा आयोजित खेल सम्मान समारोह में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जलवा दिखाने वाले कुल 293 खिलाड़ी सम्मानित हुए। कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीतने पर श्रेयसी को 50 लाख, शरद कुमार को लंदन पैरालंपिक में सिल्वर मेडल के लिए 50 लाख और शमा परवीन को अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक जीतने पर 31 लाख रुपए का विशेष सम्मान दिया गया। इसके अलावा बिहार सरकार ने श्रेयसी सिंह, शमा परवीन और रग्बी खिलाड़ी स्वीटी कुमारी को राज्य श्रेष्ठ खेल सम्मान से भी सम्मानित किया। शरद कुमार को भी यह सम्मान दिया गया। श्रेयसी सिंह, शमा परवीन और शरद को सम्मान राशि के रूप में दो-दो लाख दिए गए। अंतर्राष्ट्रीय श्रेणी के दिव्यांग वर्ग में शरद कुमार को राज्य श्रेष्ठ खेल सम्मान दिया गया। खिलाड़ियों को प्रदेश के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने सम्मानित किया।

इस वर्ष राज्य सरकार की ओर से कुल 294 खिलाडियों को खेल पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। राष्ट्रीय श्रेणी सामान्य वर्ग में कुश्ती में 2, एथेलेटिक्स में 8, भारोत्तोलन में 5, क्याकिंग एंड केनोईंग 4, कबड्डी में 11, रग्बी में 34, कराटे में 12, बॉल बैडमिंटन में 19, ताइक्वांडो में 19, वुशू में 26, तलवारबाजी में 8, सेपकटाकरा में 12 और क्रिकेट में 14 और बॉक्सिंग तथा तैराकी से एक-एक खिलाड़ी को पुरस्कृत किया गया। राष्ट्रीय श्रेणी (दिव्यांग) पॅरालम्पिक के लिए कुल 53 खिलाडियों का चयन हुआ है। इसी तरह मूक बधिर श्रेणी में 59 खिलाड़ी सम्मानित किए गए। सरकार ने इस वर्ष कुल 2.11 करोड़ रुपये के पुरस्कार वितरित किए। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने किया। इस दौरान कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि, विभाग के प्रधान सचिव रवि परमार, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के महानिदेशक अरविंद पांडेय, निदेशक सह सचिव आशीष कुमार सिन्हा, विभाग के निदेशक संजय कुमार सिन्हा, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के निदेशक-सह-सचिव आशीष कुमार सिन्हा आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि खेल के जरिए प्रदेश और देश का नाम ऊंचा करने वाले खिलाडियों को राज्य की सरकारी सेवाओं में भरपूर मौका दिया जाएगा। अब तक 155 खिलाडियों को नौकरी दी जा चुकी है, जबकि 258 की नौकरी के लिए प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने कहा तीन महीने में टास्क फोर्स की रिपोर्ट आने के बाद खेल एवं

खिलाडियों के विकास की विशेष कार्य योजना बनाई जाएगी। खिलाडियों को काफी लंबी दूरी तय करनी है। खेल और खिलाडियों के विकास के लिए पैसों की कोई कमी नहीं होने दी जाएगी।उपमुख्यमंत्री कहा कि पिछले वर्ष इसी समारोह में उन्होंने घोषणा की थी कि पाटलिपुत्र स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स के बगल में एक नए स्टेडियम के निर्माण किया जाएगा। इस घोषणा को पूरा करने का वक्त आ गया है। नए स्टेडियम के निर्माण के लिए साढ़े तीन एकड़ जमीन की व्यवस्था हो गई है और इसका हस्तांतरण भी किया जा चुका है। गर्दनीबाग में सरकारी क्वार्टरों के तोड़कर नए निर्माण होने हैं। यहां भी सरकार एक खेल परिसर विकसित करेगी। इसके लिए साढ़े 15 एकड़ जमीन चिन्हित की गई है। इसी प्रकार राजगीर में 90 एकड़ जमीन उपलब्ध करा दी गयी है जिस पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम व स्पोर्ट्स एकेडमी का निर्माण होगा।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि हम फिट तो इंडिया फिट, इस उक्ति को बिहार सही साबित करेगा। खेलो इंडिया योजना के तहत राज्य स्तर पर स्टेडियम निर्माण के लिए तीन करोड़, जिला स्तर पर डेढ़ करोड़ तथा अनुमंडल और प्रखंड स्तर पर 75 लाख रुपये दिए जाएंगे। उन्होंने खेलो इंडिया की ओर से आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बिहार के खिलाडियों ने 38 पदक प्राप्त कर बिहार का सम्मान बढ़ाया है। इसे देखते हुए खिलाडियों के सम्मान के लिए पिछले वर्ष से तीस लाख की राशि बढ़ाकर दो करोड़ रुपये कर दी गई है।उन्होंने खिलाड़ियों का आह्वान किया कि वे पूरे उत्साह व लगन से खेले, उनके प्रोत्साहन, प्रशिक्षण व कोच की नियुक्ति के लिए जितने पैसे की जरूरत होगी सरकार देगी। टीवी, आईफोन, मोबाइल और विडियो गेम की जगह युवा खेल के मैदान में अपना समय व्यतीत करें

इस अवसर पर कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि राज्य सरकार चाहती है कि खिलाडियों और खेल का प्रदेश में भरपूर विकास हो। इसके लिए राशि की कोई कमी नहीं होने दी जाएगी। मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार चाहती है कि खिलाड़ियों और खेल का प्रदेश में भरपूर विकास हो।

खेल सम्मान के लिए कुल 447 आदन प्राप्त हुए थे,जिसमें से सामान्य कोटि में 275,दिव्यांग कोटि मूक बधिर में 56 तथा पैरालम्पिक में 68 आवेदन थे।विभागीय निर्णय के अनुसार कुल 1.कुश्ती 2.बाक्सिंग 3.एथलेटिक्स 4.हाकी 5.ताइक्डो 6.हैंडबाल 7.वुशु 8.रग्बी 9. तैराकी 10.भारोत्तोलन 11.शतरंज 12.वालिबाल 13.क्रिकेट 14.टेबल टेनिस 15.कबड्डी 16.गोल्फ 17.कराटे 18.शूटिंग 19.सेपक टकरा 20. तलारबाजी 21.लान टेनिस 22.बाल बैडमिन्टन23. क्याकिंगएंड केनोइंग। कुल 23 खेल स्वीकृत हैं,जिसमें से तीरदांजी, साइकिलिंग, गोल्फ, बैडमिन्टन, बास्केटबाल, जूडो, खो खो तथा फुटबाल से आवेदन प्राप्त ही नहीं हुए। सामान्य श्रेणी में 95 आवेदनों को नियमानुकूल नहीं रहने के कारण अस्वीकृत कर दिया गया।

प्रशिक्षक वर्ग के सामान्य वर्ग में प्राप्त 37 आवेदनों से तीन को पुरस्कृत एवं सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। सम्मानित होने वाले प्रशिक्षक थे, पंकज कांबली(कराटे), दिनेश कुमार मिश्र(वुशु) औरचंदन कुमार सिंह(तीरंदाजी)।

पूर्णियाँ में सुब्रतो कप फुटबाल

कला संस्कृति एवं युवा विभाग जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में राज्यस्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिला स्कूल खेल मैदान में बिहार सरकार में कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने राज्यस्तरीय सुब्रतो कप फुटबॉल प्रतियोगिता और राज्य स्तरीय महिला हॉकी प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि राज्य सरकार खेल को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि जल्द ही स्कूलों में शारीरिक शिक्षकों की बहाली की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। यह 2014 से रुकी है। इसके साथ ही मंत्री ने खेल को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य के वैसे खिलाड़ी जिसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेडल जीता है उसको सरकार एक करोड़ की राशि बतौर प्रोत्साहन स्वरूप प्रदान करेगी। इसके साथ ही प्रखंड और जिला स्तर पर खेल संसाधन विकसित किया जाएगा ताकि ग्रामीण इलाके से अधिक-अधिक संख्या में खिलाड़ी राष्ट्रीय फलक अपना जलवा दिखा सकें। उन्होंने खिलाड़ियों को खेल अनुशासन से खेलने की नसीहत दी।

इस मौके पर सदर विधायक विजय खेमका और रूपौली विधायक बीमा भारती ने खिलाड़ियों को संबोधित किया और उनका उत्साहवर्धन किया। उपविकास आयुक्त रामशंकर ने सभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि खेल को हमेशा खेल भावना के साथ खेलना चाहिए। उन्होंने कहा कि हाल में जिला में राज्य स्तरीय महिला कबड्डी का सफलतापूर्वक आयोजन हो चुका है। अब हॉकी और फुटबॉल की प्रतियोगिता का आगाज हुआ है। उन्होंने कहा कि खेल को हमेशा ईमानदारी और लगन से खेलना चाहिए। इस मौके पर जिला परिषद अध्यक्ष क्रांति देवी भी मौजूद थी। जिला फुटबॉल संघ के अध्यक्ष डॉ मुकेश कुमार ने भी खिलाड़ियों को संबोधित किया। इस मौके पर जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष संतोष भारत भी उपस्थित थे। इस मौके पर आरडीडीई डॉ. चंद्र प्रकाश झा समेत सभी खेल संघ के पदाधिकारी भी मौजूद थे। इस मौके पर जिला खेल पदाधिकारी रणधीर कुमार ने बताया कि हॉकी प्रतियोगिता में अंडर 14 और अंडर 17 मैच और फुटबॉल में अंडर 17 प्रतियोगिता का आयोजन है। इन दोनों टीमों से कुल 1000 के करीब खिलाड़ी शामिल हुए हैं। जिला खेल पदाधिकारी ने बताया कि खिलाड़ियों की जरूरतों का ख्याल रखा जा रहा है। उद्घाटन के मौके पर स्मृति चिह्न देकर सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। मंत्री समेत सभी अतिथियों ने मैदान में जाकर सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया।

जिला स्कूल खेल मैदान में प्रतियोगिता के उद्घाटन के मौके पर सभी खिलाड़ियों अपने ड्रेस में मार्च पास्ट में हिस्सा लिया। स्काउट की टीम बैंड के साथ सभी खिलाड़ियों के आगे-आगे चल रही थी। फुटबॉल में 38 और हॉकी में 16 टीमें मार्च मार्च पास्ट में शामिल हुई। फुटबॉल प्रतियोगिता में राज्य के 38 जिलों की टीम हिस्सा ले रही हैं। इसमें 600 से अधिक खिलाड़ी का जमावड़ा लगा है। यह क्लब वाइज आयोजित होने वाली प्रतियोगिता है। इसमें जीतने वाली टीम ही राष्ट्रीय सुब्रतो मुखर्जी कप में हिस्सा लेने पहुंचेगी। पूर्णिया से जिला स्कूल की टीम हिस्सा ले रही है। इससे पूर्व भी दो बार ऐसा हो चुका है जब पूर्णियाँ की फुटबॉल टीम को राष्ट्रीय स्तर पर खेलने का मौका मिला था। स्वागत नृत्य पूर्णिया उच्च विद्यालय रामबाग के बच्चों ने किया।

फुटबाल में सभी जिलों की टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता जिला स्कूल और डीएसए मैदान में खेली गई। हॉकी की दो प्रतियोगिता अंडर 17 और अंडर 14 राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में आयोजित हुई। महिला खिलाड़ियों का आवासन स्थल कन्या उच्च विद्यालय है जबकि फुटबॉल के सभी खिलाड़ियों का आवासन स्थल जिला स्कूल में किया गया है। आवासन स्थल पर चिकित्सक की टीम की तैनाती की गई है । हॉकी में अंडर 14 और अंडर 17 की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इसके आधार पर ही राज्यस्तरीय टीम ही हिस्सा लेंगी। इस अवसर पर पहले दिन फुटबॉल में छह मैच खेले गए और हॉकी अंडर 17 में एक ही मैच रोहतास और भोजपुर के बीच खेला गया है।

डीएसए मैदान में राज्यस्तरीय सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता का फाइनल पूर्णिया और पश्चिम चंपारण के बीच खेला गया। इस मुकाबले में अंत तक रोमांच बरकरार रहा। खिताब पाने के लिए जद्दोजहद कर रही दोनों टीम में से पूर्णियाँ की टीम ने पश्चिम चंपारण को 1-0 से हराकर चौंपियन का खिताब जीत लिया। खेल के अंत में विजयी टीम को सदर विधायक विजय खेमका, जिला परिषद के अध्यक्ष क्रांति देवी, जिला परिषद के सदस्य विवेकानंद और डीडीसी रामशंकर ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया ।

उन्होंने बताया कि पांच दिनों तक चलने वाले इस राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में राज्य के चार सौ से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया है। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के बाद खिलाड़ी कैंप में भाग लेंगे। इसके बाद राज्य की टीम दिल्ली नेशनल प्रतियोगिता में भाग लेगी। इस मौके पर विभिन्न खेल संघ के सचिव और गणमान्य लोग मौजूद थे।

स्कूली बच्चों ने एथलेटिक्स में दिखाए कमाल

पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में बिहार स्कूल स्पोर्ट्स मीट 'तरंग' प्रतियोगिता का रंगारंग आगाज हुआ। बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् और कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की ओर से आयोजित इस राज्यस्तरीय प्रतियोगिता का उद्घाटन शिक्षा मंत्री डॉ. कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा और कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री कृष्णनंदन वर्मा ने सभी प्रतिभागी खिलाडियों को बधाई दी और आयोजन के प्रति संतोष व्यक्त किया। कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्णकुमार ऋषि ने इस अवसर पर कहा कि खेल हमारे जीवन का अनिवार्य पहलू है। यह विद्यार्थियों की एकाग्रता बढाता है। स्कूलों में पढाई के साथ खेल भी अनिवार्य रूप से होना चाहिए,यह एक बेहतर और योग्य नागरिक तैयार करने में सहयोग करती है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को अपनी शुभकामनाएं दीं।

इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता में राज्य के 38 जिलों से 1976 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इन बच्चों का चयन स्थानीय एवं जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता आयोजित कर किया जाता है। इसमें 14 और 17 साल के लड़के और लड़कियां हिस्सा ले रही हैं। उद्घाटन समारोह में बच्चों ने बैंड की धुन पर आकर्षक मार्च पास्ट से स्टेडियम में मौजूद हजारों लोगों का मन मोह लिया। बच्चों ने रंग-बिरंगे परिधानों में हैरतअंगेज करतब दिखाए। .

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् के निदेशक संजय सिंह ने इस अवसर पर बच्चों को खेल के प्रति निष्ठा, लगन, परिश्रम और अनुशासन की शपथ दिलायी। इस मौके पर बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, द्वारा प्रकाशित पत्रिका आह्वान का खेल विशेषांक 'तरंग' का विमोचन किया गया।

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद,पटना सह कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार की ओर से पाटलिपुत्र खेल परिसर में संपन्न हुए बिहार स्कूल स्पोर्ट्स मीट तरंग के एथलेटिक्स स्पर्धा का ओवर ऑल खिताब भागलपुर ने 35 अंक लेकर जीत लिया। फर्स्ट रनर अप 25 अंक लेकर सिवान और सेकेंड रनर अप 20 अंक लेकर औरंगाबाद की टीम रही।

बिहार एथलेटिक संघ के तकनीकी सहयोग से आयोजित इस मीट में भागलपुर और एकलव्य एथलेटिक सेंटर भागलपुर को एक मानते हुए ओवर ऑल खिताब देने का फैसला किया गया। मीट के दौरान एकलव्य और भागलपुर के खिलाड़ी अलग-अलग हिस्सा ले रहे थे। कला-संस्कृति एवं युवा विभाग की ओर से संचालित एकलव्य प्रशिक्षण केन्द्र भागलपुर में सिर्फ एथलेटिक्स की ट्रेनिंग दी जाती है।

पटना की रिले टीम ने बालिका अंडर-14 के चार गुना सौ मीटर का दौड़ 58.29 सेकंड में तय कर स्वर्ण पदक जीता। पश्चिम चंपारण की टीम ने रजत और पूर्णिया ने कांस्य पदक जीता। ओवर ऑल खिताब जीतने वाली भागलपुर की टीम को दो स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। बालक अंडर-14 का चार गुना सौ मीटर के रिले का स्वर्ण भागलपुर ने 49.18 सेकंड में जीता, 49.80 सेकंड में वैशाली ने रजत पदक जीता जबकि 50.14 सेकंड का समय लेकर नालंदा ने कांस्य पदक जीता। फर्स्ट रनर अप सिवान और सेकेंड रनर अप औरंगाबाद की टीम रही

प्रतियोगिता की समाप्ति के बाद प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग आर. के. महाजन ने विजेता जिला भागलपुर को ट्रॉफी एवं खिलाड़ियों को पदक देकर हौसला बढ़ाया। इस अवसर पर बिहार कि विभिन्न जिले से आए बच्चों ने कई नृत्य प्रस्तुतियों से अलग ही समा बांध दिया। राज्य परियोजना निदेशक संजय सिंह ने प्रतीक चिह्न देकर अतिथियों को सम्मानित किया।

18 साल बाद बिहार क्रिकेट का विजय से शुभारंभ

कला, संस्कृति और युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने ऊर्जा स्टेडियम में बिहार के सीनियर क्रिकेटरों से मुलाकात की और उन्हें विजय हजारे ट्रॉफी वनडे क्रिकेट में फतह हासिल करने के लिए आशीर्वाद दिया। खेल मंत्री ने कहा कि हम सुप्रीम कोर्ट का आभार व्यक्त करते हैं और धन्यवाद देते हैं, जिनके आदेश से 17 साल बाद बिहार को बीसीसीआइ के सभी टूर्नामेंटों में खेलने का अवसर मिला है। उन्होंने 19 सितंबर से गुजरात में शुरू होने वाले टूर्नामेंट के लिए चुनी गई टीम के खिलाड़ियों और कोच सहित बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के पदाधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए ऋषि ने कहा कि आप सब ऊर्जावान हैं। आपके भीतर जीतने का जज्बा भी है। बस उस ऊर्जा का सदुपयोग कर राज्य का नाम रोशन कीजिए। सीनियर टीम के कोच सुब्रतो बनर्जी और कप्तान प्रज्ञान ओझा से उन्होंने कहा कि आपके कंधों पर बिहार क्रिकेट को संवारने की बड़ी जिम्मेदारी है। हमें उम्मीद है कि आप अपने अनुभव और खिलाड़ियों की प्रतिभा के बल पर गुजरात से जीत हासिल कर वापस लौटेंगे। अगर ऐसा हुआ तो हम आपका स्वागत करने के लिए एयरपोर्ट पर खड़े रहेंगे।

आशा के अनुरूप बिहार की टीम ने अहमदाबाद में पहले ही मैच से अपना विजय अभियान शुरु किया। जो इस टूर्नामेंट में इसकी छठी जीत तक जारी है। बिहार की चीम के सात मैचों में 26 अंक हो गए हैं। बिहार का एक मैच रद्द हो गया था।टीम अब अपने अंतिम प्ले ग्रुप मैच में मिजोरम से मुकाबला करेगी। क्वार्टर फाइनल में बिहार का प्रवेश निश्चित माना जा रहा है। बिहार की धरती ने सबा करीम, कीर्ति आजाद जैसे क्रिकेटर दिए है। 18 वर्षों के वनवास के बाद क्रिकेट में वापसी करने वाली बिहार के खिलाड़ियों से इतने अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद क्रिकेट के पंडितो को भी नहीं होगी। बिहार में क्रिकेट की दीवानगी ही कहे, जो लगातार जीत के साथ विजय हजारे ट्रॉफी में बिहार अपने ग्रुप के टॉप पोजीशन पर है ।

वीनू मांकड क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए विदा हुई बिहार की टीम

कई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों का गवाह रहे मोइनुल हक स्टेडियम से बीसीसीआई द्वारा आयोजित वीनू मांकड़ अंडर- 19 एकदिवसीय टीम टूर्नामेंट के लिए बिहार की टीम को कला संस्कृति एवं या विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने विदाई दी। मंत्री ने सभी खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर उन्हें शुभकामनाएं दीं,और अपने वरिष्ठ खिलाड़ियों की तरह जीत कर आने के लिए हौसला आफजाई की। यह टूर्नामेंट ओडिया की राजधानी भुनेश्वर में आयोजित हो रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार में क्रिकेट के भविष्य के लिए सरकार पूरी तरह सचेत है और प्रयासरत है। राजगीर में अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल अकादमी का शिलान्यास उसी दिशा में बेहतर शुरुआत है। उन्होंने कहा कि बहुत जल्द मोइनुल हक स्टेडियम अंतराष्ट्रीय मैचों के लिए भी तैयार हो जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार बेहतर खिलाड़ियों के प्रोत्साहन में कोई कसर नहीं रखेगी।

टीम का कप्तान अपूर्वा आनंद को बनाया गया है। परमजीत को उप कप्तान बनाया गया है। टीम के मैनेजर संजय कुमार (कैमूर) होंगे जबकि कोच अशोक कुमार होंगे। उक्त जानकारी बीसीए के सचिव रवि शंकर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि फीजियो डॉ. हेमेंदु नारायण सिंह होंगे जबकि ट्रेनर विशाल सिंह हैं। खिलाड़ियों का नाम: पीयूष कुमार सिंह (पटना), अंकुश राज (मधुबनी), विपिन कुमार सौरभ (औरंगाबाद), प्रकाश बाबू, हर्ष राज, आकाश राज, बलजीत सिंह बिहारी (सभी पटना), मुन्ना कुमार (नालंदा), आदर्श कुमार (मधुबनी), परमजीत सिंह (भोजपुर), शिवम संजय कुमार (जहानाबाद),नवीन कुमार (पटना), अपूर्वा आनंद (अरवल) कप्तान, मलय राज (पटना), रणधीर दूबे (मुजफ्फरपुर)।

लोक रंग बिखेरती "चेतना रंग उत्सव"

मैथिली की प्रतिनिधि संस्था चेतना समिति ने पहली बार "चेतना रंग उत्सव" नाम से मैथिली नाट्य समारोह का आयोजन विगत 24 सितंबर से 29 सितंबर,18 तक कालिदास रंगालय , पटना में किया। उत्सव में कला एवं साहित्यिक रंग देखने को मिले। छः दिवसीय इस नाट्य समारोह का उद्घाटन विधान परिषद के सभापति हारुण रशीद ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ,लोक स्वास्थ अभियंत्रण मंत्री विनोद नारायण झा ने रसचोकी जैसे लोकसंगीत के आयोजन पर समिति की प्रशंसा की। सभा की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष विवेकानन्द झा ने किया। प्रारंभ में आगत अतिथियों का स्वागत सचिव उमेश मिश्र ने किया।

छः दिवसीय समारोह के दौरान विलुप्त हो रहे रसनचौकी का वादन हरदिन कालिदास रंगालय में होता रहा। कोइलख ,मधुबनी से आए सिद्धहस्त कलाकार घोंघर राम ,रामदेव राम, सोमन राम और मखन राम ने अपने रसनचौकी से विद्यापति गीत, तिरहुता, सोहर, नचारी, महेशवाणी, सलहेश और समदाओन जैसे अनेकों पारंपरिक लोक गीत सुनाकर राजधानीवासियों को मंत्र-मुग्ध कर दिया

इस समारोह में समिति द्वारा विभिन्न नाट्य-विषयक समस्या पर 26 सितम्बर से 28 सितम्बर तक यूथ होस्टल, फ्रेजर रोड में परिचर्चा का भी आयोजन हुआ। पहले दिन परिचर्चा का विषय था "नाटक किएक नहि लिखाइत अछि" इस गोष्ठी के मुख्य वक्ता वरिष्ठ नाटककार महेन्द्र मलंगिया ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि कौन कहता है, नाटक नहीं लिखा जा रहा है। ये समस्या अवश्य है कि अन्य साहित्य से कम लिखा जाता है। इस मौके पर कलकत्ता के वरिष्ठ निर्देशक गंगा झा और दिल्ली से आये रंगकर्मी पवन झा एवं अभिषेक देवनारायण ने भी अपने विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता छत्रानंद सिंह झा ने किया। दूसरे दिन, परिचर्चा का विषय था "मंचनक समस्या"। इसके प्रतिभागी वक्ता थे कमलानन्द झा विभूति, कमल मोहन चुन्नू, प्रकाश झा और मिथिलेश राय। रंगकर्मी प्रकाश झा ने नाट्य मंचन के समस्या पर सविस्तार आलेख पाठ किया। संगोष्ठी में उपस्थित अभिनेत्री मोना झा ने भी अपने मंतव्य रखे। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम ने की। "ग्रामीण क्षेत्रसँ विलुप्त होइत नाटक" विषय पर परिचर्चा तीसरे दिन के संगोष्ठी में हुई। मुख्य वक्ता के रूप में जठाधर पासवान, महेन्द्र लाल कर्ण, शैलेश कुमार झा और सागर सिंह ने ग्रामीण रंगमंच के सामने खड़ी समस्याओं के कारणों की चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता मैथिली के वरिष्ठ कथाकार अशोक झा ने किया।

इस पूरे कार्यक्रम के दौरान पूरे नौ नाटकों का प्रदर्शन हुआ। नाट्य मंचन का आगाज अरविन्द अक्कू के लिखे नाटक "फुटानी चौक" से हुआ। इस नाटक के निर्देशक थे अमलेश आनन्द। दूसरे दिन डा. अक्कू लिखित नाटक "झिझिर कोना" का मंचन नाट्य संस्था, मैथिली संस्कृति एवं कला मंच, पटना ने निर्देशक नितेश कुमार के निर्देशन में किया। महेन्द्र मलंगिया के लिखे दो नाटकों काठक लोक और हाय रे हमर घरवाली का मंचन क्रमशः भंगिमा, पटना एवं अछिंजल, दिल्ली ने किया। मिथियात्रीक झंकार, कोलकाता सिसकैत संस्कार नाटक के द्वारा आज के पारिवारिक और समाजिक संस्थाओं में हो रहे छीजन और उसके परिणाम को दर्शाने का चेष्टा किया। इस नाटक के लेखक और निर्देशक थे शम्भुनाथ मिश्र।

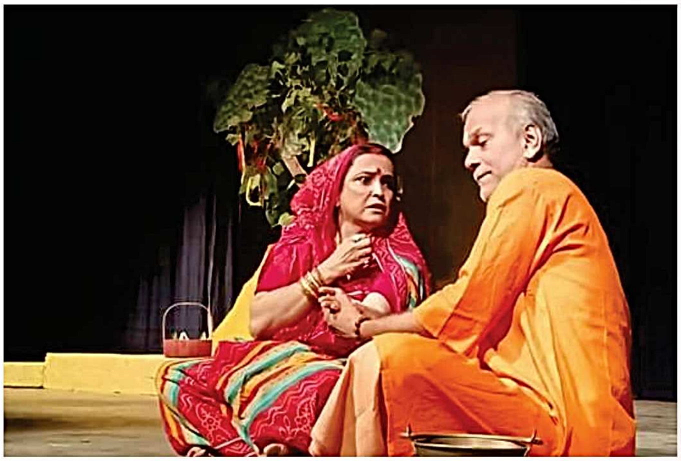

इस समारोह में मैथिली एवं हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाओं का मंचन होना उपलब्धि रही। नाच, पटना ने मनुष्य के भीतर घुस आये भय को सुभाषचन्द्र यादव की मूल कथा डर के माध्यम से देखाने का प्रयास किया। इस नाटक में महाप्रकाश के कविता का प्रयोग किया गया था। इस नाटक के निर्देशक निखिल रंजन ने विभिन्न रंगो का प्रयोग कर चेतना रंग उत्सव को सार्थक करते दिखे। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्र रहे मिथिलेश राय ने अपने कुशल निर्देशन में फणीश्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध हिन्दी कथा 'आदिम रात्रिक महक' को मैथिली में मंचन कर दर्शकों को भाव-विभोर कर गये। इस कथा के मूल चरित्र करमा को अभिनेता राजसोनी ने जिस जीवंतता के साथ जिया, स्तुत्य है। भरत नाट्य कला केन्द्र, पूर्णियाँ की यह प्रस्तुति समारोह की उपलब्धि कही जा सकती है। जटाधर पासवान लिखित और नित्यानन्द झा गोकुल निर्देशित लोक नाट्य परंपरा डोमकछ का प्रदर्शन इस समारोह को विशिष्ट बनाती है। जमघट, मधुबनी की यह प्रस्तुति, लोकनाट्य तत्वों को समुचित प्रयोग करते हुये निम्नवर्ग के जीवन प्रवृति और उसके कारक एवं परिणाम को खोजने का श्लाधनीय प्रयास करता है।

समारोह का समापन, अकादमी पुरस्कार से सम्मानित इन्द्रकान्त झा ने रसनचौकी वादकों एवं संस्थाओं को स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया।

● मनोज कुमार

लोकनाटकों की रही धूम

अगस्त महीने के पहले सप्ताह की शुरुआत अक्षरा आर्ट्स,पटना द्वारा कालिदास रंगालय,पटना में ध्रुव गुप्त की कहानी ३आरम्भ३ का मंचन अजित कुमार के निर्देशन में हुआ,इसका नाट्य रूपांतरण संतोष राणा ने किया। दूसरे सप्ताह में अन्वेषा, पटना द्वारा कालिदास रंगालय में अनिल कुमार मुखर्जी द्वारा लिखित संदीप कुमार निर्देशित 'हम जीना चाहते हैं', मुखातिब,भोजपुर द्वारा कालिदास रंगालय में डॉ राम कुमार वर्मा लिखित राजू कुमार निर्देशित 'कौमुदी महोत्सव' का मंचन हुआ। रंगमार्च,पटना द्वारा कालिदास रंगालय, पटना में आयोजित तीन दिवसीय नाट्योत्सव 'रंगमार्च थियेटर फेस्टिवल-2018' का पर्दा जन विकल्प, सीतामढ़ी द्वारा प्रबोध जोशी लिखित अरुण कुमार श्रीवास्तव निर्देशित नाटक 'पागल', दूसरे दिन दस्तक, पटना द्वारा शरद जोशी की मूल रचना को 'सेल्फी विद डेड बॉडी उर्फ एक था गधा' का मंचन पुंज प्रकाश के निर्देशन में हुआ, तीसरे दिन आयोजन का समापन रंगमार्च द्वारा प्रेमचन्द की जुबानी तैमूर की कहानी 'दिल की रानी' का मंचन हुआ। इसका नाट्य रूपांतरण एवं निर्देशन मृत्युंजय शर्मा ने किया। द स्पॉटलाइट थियेटर, दरभंगा द्वारा मोहन राकेश लिखित सागर सिंह निर्देशित 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के संगीत नाटक विभाग, के सभागार में हुआ। द आर्ट मेकर,पटना द्वारा नंदकिशोर आचार्य लिखित समीर कुमार निर्देशित 'जूते' का मंचन कालिदास रंगालय में हुआ। नवोदित, बेगूसराय द्वारा श्रीकांत किशोर लिखित अजय कुमार निर्देशित नाटक 'चांद जमीन का टुकड़ा और मैं' का मंचन दिनकर कला भवन, बेगूसराय में हुआ। मंत्रा इंटरटेनमेंट एंड सर्विसेज, पटना द्वारा मनीषा कुमारी लिखित एवं निर्देशित नाटक 'आप कौन हैं?' का मंचन कालिदास रंगालय में हुआ।

तीसरे सप्ताह में संस्कृति, मुजफ्फरपुर द्वारा राज कुमार लिखित सुशांत कुमार निर्देशित 'जज्बा' का मंचन डॉ राम मनोहर लोहिया कॉलेज, मुजफ्फरपुर में हुआ। किसलय, पटना द्वारा डॉ विजय मिश्र लिखित शिवजी सिंह निर्देशित 'तट निरंजना' का मंचन कालिदास रंगालय में हुआ। राग, पटना द्वारा शरण कुमार लिम्बाले की आत्मकथा पर आधारित नाटक 'आउटकास्ट' का दो दिवसीय मंचन रणधीर कुमार के निर्देशन में कालिदास रंगालय में हुआ।

चौथे सप्ताह कालिदास रंगालय में बिस्तार, पटना द्वारा इरशाद कामिल लिखित उज्ज्वला गांगुली निर्देशित 'बोलती दीवारें' का मंचन हुआ, प्रयास रंगमंडल, पटना द्वारा आयोजित नूर फातिमा जयंती समारोह के अवसर पर आयोजक दल ने बी के सर लिखित रवि भूषण बब्लू निर्देशित 'अपना-अपना भाग्य' का मंचन किया, प्रेमचन्द रंगशाला में प्रस्तुति, पटना द्वारा नागार्जुन लिखित योगेश त्रिपाठी निर्देशित द्वारा नाट्य रूपांतरित 'रतिनाथ की चाची' का मंचन शारदा सिंह के निर्देशन में हुआ। मॉडर्न थियेटर फाउंडेशन, बेगूसराय द्वारा फ्रिट्ज कारिंथे (हंगरी) लिखित परवेज यूसुफ निर्देशित नाटक 'रिफण्ड' का मंचन दिनकर कला भवन, बेगूसराय में हुआ। पूरे महीने के मंचित हुए नाटकों में अजित कुमार द्वारा निर्देशित 'आरम्भ' जो कि मूल रूप से इंसान के रिटायरमेंट के बाद वाली जिंदगी को पुनः आरम्भ करने की वकालत करती है। पुंज प्रकाश द्वारा निर्देशित शरद जोशी की 'एक था गधा' को समकालीनता के साथ 'सेल्फी विद डेड बॉडी' के रूप में प्रस्तुतिकरण विचारोत्पादक रही। देश के विभिन्न महत्वपूर्ण रंग आयोजनों में अपनी भागीदारी कर चुकी रणधीर कुमार द्वारा निर्देशित 'आउटकास्ट' का दो वर्षों के बाद पटना में पुनः मंचन सुखद रहा। दरभंगा में सागर सिंह निर्देशित 'आषाढ़ का एक दिन', मृत्युंजय शर्मा निर्देशित ३दिल की रानी३,समीर कुमार की 'जूते', शारदा सिंह की 'रतिनाथ की चाची' महीने की सराहनीय प्रस्तुतियों में रही।

सितम्बर महीने के प्रमुख नाटकों पर गौर करें तो पहले सप्ताह में द स्ट्रगलर्स, पटना ने प्रेमचन्द रंगशाला में ज्या पॉल सत्रे लिखित रजनीश कुमार के निर्देशन में 'मेन विदाउट शैडो', रंगम, पटना ने कालिदास रंगालय में रास राज निर्देशित मंटो की कहानी 'प्रोवोस्ट', बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय, पटना द्वारा रंगालय में भीष्म साहनी लिखित अजित गुज्जर निर्देशित 'कबिरा खड़ा बाजार में', तीसरे सप्ताह में मुखातिब भोजपुर द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी आर पी तरुण की याद में कालिदास रंगालय में आयोजित तीन दिवसीय नाट्योत्सव तरूणोत्सव का पर्दा बिस्तार, पटना द्वारा जयवर्धन लिखित उज्ज्वला गाँगुली निर्देशित 'मस्त मौला' के मंचन से उठा, दूसरे दिन कोरस, पटना ने शिवमूर्ति के उपन्यास पर आधारित 'कुच्ची का कानून' का मंचन समता राय के निर्देशन में किया, समापन प्रांगण, पटना ने टैगोर लिखित डॉ किशोर सिन्हा द्वारा नाट्य रूपांतरित सोमा चक्रवर्ती निर्देशित 'चारुलता' के मंचन से हुआ। सांस्कृतिक विकास केंद्र, बेगूसराय द्वारा विजय तेंदुलकर लिखित कुणाल भारती निर्देशित 'कमला' का मंचन बेगूसराय आई टी आई सभागार, लवहरचक, बेगूसराय में हुआ। इधर कालिदास रंगालय में क्रिएटिव आर्ट थियेटर, पटना द्वारा हरी भाई बड़गांवकर लिखित दीपक कुमार निर्देशित 'गधे की बारात' का मंचन हुआ। अंतिम सप्ताह में प्रयास एकता मंच एवं बिहार आर्ट थियेटर द्वारा कालिदास रंगालय में आयोजित नूर फातिमा जयन्ती समारोह में बी के सर लिखित रवि भूषण बब्लू निर्देशित 'अपना-अपना भाग्य', भरत नाट्य कला केंद्र, पूर्णियाँ द्वारा फणीश्वरनाथ रेणु लिखित मिथिलेश रॉय निर्देशित 'आदिम रात्रि की महक' का मंचन हुआ इसका नाट्य रूपांतरण उमेश आदित्य ने किया। जमघट, मधुबनी द्वारा जटाघर पासवान लिखित नित्यानंद झा निर्देशित 'डोमकछ' का मंचन हुआ।

राजन कुमार सिंह

रोहिणी हट्टंगडी हुई सम्मानित

निर्माण कला मंच द्वारा 19 सितंबर से 23 सितंबर तक चलने वाले राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव रंग जलसा 2018 का शुभारंभ प्रेमचंद रंगशाला, राजेन्द्र नगर में किया गया। समारोह का शुभारंभ वरिष्ठ रंगकर्मी बंशी कौल, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष व्यास जी, पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान एवं मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के निदेशक संजय उपाध्याय ने किया। कार्यक्रम का संचालन चर्चित रंगकर्मी अभिषेक शर्मा ने किया। इस अवसर पर हर वर्ष दिया जाने वाला रंग शांति सम्मान वरिष्ठ अभिनेत्री रोहिणी हट्टंगडी को बंशी कौल के हाथों प्रदान किया गया।उनके सम्मान में पटना की विभिन्न रंगसंस्थाओं द्वारा भी उन्हें सम्मान स्वरुप भेंट अर्पित किए गए। समारोह के पहले दिन आविष्कार, मुंबई द्वारा रामदास भटकल द्वारा लिखित नाटक 'जगदम्बा' का मंचन प्रतिमा कुलकर्णी के निर्देशन में किया गया। नाटक जगदम्बा कस्तूरबा गांधी की कहानी है। उन्होंने कभी अंधवत बापू का पालन नहीं किया और न कभी उनकी पत्नी होने से इनकार किया। अक्सर उन्होंने अपने प्रयोगों, उनके नये विचारों का विरोध किया। लेकिन एक बार जब वह समझ गयीं कि उनका उद्देश्य व परिदृश्य क्या है तो वह पूरी तरह समर्पित होकर उनका पालन करतीं। जगदम्बा होने के बावजूद वह अपने बच्चों की 'बा' के रूप में अपने अस्तित्व को नहीं भूल सकती हैं। उनका जीवन उस पर गहरी छाप छोड़ता है। नाटक कस्तूरबा से जगदम्बा तक उनकी व्यक्तिगत, राजनीतिक और भावनात्मक यात्रा को दर्शाता है।

दूसरे दिन अपने दृढ़ संकल्प से पहाड़ का सीना चीर कर रास्ता बनाने वाले माउंटेन मैन दशरथ मांझी की कहानी मंच पर दिखी। नाटक के जरिए कलाकारों ने दशरथ मांझी के साहस और उनके काम को दिखाया। मिथिलेश सिंह लिखित व निर्देशित नाटक का मंचन प्रयास रंगमंडप के कलाकारों ने किया। अपनी धुन के पक्के दशरथ मांझी ने अकेले अपने दम पर छेनी और हथौड़ी से पहाड़ काटने जैसा असंभव सा कार्य कर साबित कर दिया कि इंसान चाह ले तो कुछ भी असंभव नहीं। दशरथ मांझी के किरदार में उदय सागर व उनकी पत्नी फगुनिया के किरदार को रजनी शरण ने मंच पर जीवंत किया

तीसरे दिन 'आओ तनिक प्रेम करें' का मंचन किया गया। विभा रानी लिखित नाटक का मंचन डिवाइन सोशल डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन के बैनर तले हुआ। नाटक को लोगों ने देखा और काफी सराहा भी। 'आओ तनिक प्रेम करें' में जीवन के जद्दोजहद में फंसे पति-पत्नी ओम गुप्ता और सपन की कहानी है। उम्र के 60 वें पड़ाव पर ओम को अचानक यह ख्याल आता है कि उसने तो जीवन भर प्रेम किया ही नहीं और यहीं से शुरू होती है दोनों की आत्म यात्रा, जिसमें जीवन की संवेदना, उदासीनता, कर्तव्य और मां की ममता है तो पिता का आहत अहम भी है, लेकिन प्रेम कहीं नहीं है। अभिव्यक्ति का अभाव दोनों में है जो दोनों को ही एक खालीपन की ओर लिए जा रहा है। इसमें मंच पर विवेक कुमार और रूबी खातून ने बेहतरीन अभिनय से सभी का मन जीत लिया। नाटक का निर्देशन स्वरम उपाध्याय ने किया था।

रंगजलसा में मधुकर सिंह लिखित और राजेश राजा निर्देशित नाटक विश्वा संस्था के बैनर तले नाटक को दर्शकों ने भिखारी ठाकुर के जीवन को नाटक के जरिए देखा। इस नाटक में भिखारी ठाकुर के बचपन से लेकर उनके जीवन के विभिन्न संघर्षों को दिखाने की कोशिश की गई थी। इसमें मंच पर तरुण कुमार, संदीप कुमार तनु, हरेंद्र कुमार, सुधांशु शेखर, जगदीप यादव ने अपने अभिनय से दर्शकों का मन जीत लिया। इसमें बृज बिहारी मिश्रा, आदित्य गुंजन, बबलू गांधी, कुणाल कुमार, राहुल रवि, अभिषेक आनंद, रौशन कुमार और रवि वर्मा ने सहयोग किया।

रंगजलसा के आखिरी दिन लेखिका गीताश्री के उपन्यास पर आधारित नाटक हसीनाबाद का मंचन निर्माण कला मंच की ओर से किया गया। निर्देशन प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक संजय उपाध्याय ने किया था। नाटक द्वारा समाज की तल्ख सच्चाइयों से पर्दा उठा गया। कलाकारों ने दिखाया कि हम नैतिकता और आडंबरों का बोझ ओढ़े हुए हैं लेकिन हमारा जमीर कितना खोखला है। नाटक हसीनाबाद आत्म पहचान की तलाश में संघर्षरत स्त्री की कहानी को दिखा गया।

रंगजलसा में प्रत्येक दिन दो नुक्कड़ नाटक भी रंगशाला के बाहरी परिसर में प्रदर्शित किए गए।

संसार पूजता जिन्हें तिलक

रामधारी सिंह दिनकर

संसार पूजता जिन्हें तिलक,
रोली, फूलों के हारों से,
मैं उन्हें पूजता आया हूँ
बापू ! अब तक अंगारों से
अंगार, विभूषण यह उनका
विद्युत पीकर जो आते हैं
ऊँघती शिखाओं की लौ में
चेतना नई भर जाते हैं।
उनका किरीट जो भंग हुआ
करते प्रचंड हुंकारों से
रोशनी छिटकती है जग में
जिनके शोणित के धारों से।
झेलते वह्नि के वारों को
जो तेजस्वी बन वह्नि प्रखर
सहते हीं नहीं दिया करते
विष का प्रचंड विष से उत्तर।
अंगार हार उनका, जिनकी
सुन हाँक समय रुक जाता है
आदेश जिधर, का देते हैं
इतिहास उधर झुक जाता है।
अंगार हार उनका की मृत्यु ही
जिनकी आग उगलती है
सदियों तक जिनकी सही
हवा के वक्षस्थल पर जलती है।
पर तू इन सबसे परे; देख
तुझको अंगार लजाते हैं,
मेरे उद्वेलित-जलित गीत
सामने नहीं हों पाते हैं।
तू कालोदधि का महास्तम्भ,आत्मा के नभ का तुंग केतु,
बापू ! तू मर्त्य, अमर्त्य, स्वर्ग, पृथ्वी, भू, नभ का महा सेतु,
तेरा विराट यह रूप कल्पना पट पर नहीं समाता है।
जितना कुछ कहूँ मगर, कहने को शेष बहुत रह जाता है।
लज्जित मेरे अंगार; तिलक माला भी यदि ले आऊँ मैं.
किस भांति उठूँ इतना ऊपर? मस्तक कैसे छू पाँऊं मैं।
ग्रीवा तक हाथ न जा सकते, उँगलियाँ न छू सकती ललाट।
वामन की पूजा किस प्रकार, पहुँचे तुम तक मानव, विराट!

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com